Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ मंगला गौरी व्रत कथा ॥

॥ जय मंगला गौरी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ धर्मपाल और गौरी की आराधना ॥

यह धर्मपाल के परिवार की प्रचलित कथा का सरल रूपांतरण है। लोक-वाचन में पुत्र की आयु, पात्रों के नाम और घटनाओं का क्रम अलग मिलता है।

कुण्डिन नगर में धर्मपाल नाम के धनवान व्यापारी अपनी पत्नी के साथ रहते थे। घर में सुख-सुविधा थी, फिर भी संतान न होने से दोनों दुःखी रहते थे। वे हर आने वाले अतिथि का सत्कार करते और माता गौरी से परिवार के मंगल की प्रार्थना करते थे।

एक दिन एक साधु ने उन्हें श्रावण मास के मंगलवार को मंगला गौरी का व्रत और पूजन करने का मार्ग बताया। धर्मपाल की पत्नी ने श्रद्धा से संकल्प लिया। पूजा, कथा और प्रार्थना करते समय वह अपने मन में धैर्य बनाए रखती और घर के लोगों के प्रति सद्भाव रखती थीं।

कथा के अनुसार देवी की कृपा से उनके घर पुत्र जन्मा। धर्मपाल प्रसन्न थे, पर एक भविष्यवाणी में पुत्र की आयु कम बताई गई थी। माता-पिता को यह चिंता सताती रही। पुत्र बड़ा हुआ तो उसका विवाह कमला नाम की युवती से हुआ, जो मंगला गौरी की भक्त थी।

विवाह के बाद कमला श्रावण के मंगलवारों को श्रद्धा से माता गौरी का स्मरण करती रही। उसे अपने पति और परिवार की कुशलता की चिंता थी, पर उसने डर के स्थान पर धैर्य, प्रार्थना और सजगता को अपनाया।

॥ कमला का साहस और कथा का संदेश ॥

लोककथा में आता है कि माता गौरी ने कमला को स्वप्न में आने वाले संकट के प्रति सचेत किया। कथा के एक प्रचलित रूप में एक सर्प के आने और पास रखे दूध तथा मिट्टी के पात्र से उसका ध्यान बदलने का प्रसंग है। कमला ने सावधानी से पति की रक्षा की।

परिवार ने कमला की सूझ-बूझ और माता गौरी के प्रति उसकी श्रद्धा की प्रशंसा की। धर्मपाल और उनकी पत्नी ने पुत्रवधू को आशीर्वाद दिया। आगे वे सभी सुखपूर्वक रहने लगे और श्रावण के मंगलवारों को गौरी पूजन की परंपरा निभाते रहे।

कथा का भाव

यह कथा परिवार के प्रति प्रेम, संकट में धैर्य और सूझ-बूझ को महत्व देती है। इसे विवाह, संतान या आयु के निश्चित परिणाम की गारंटी न मानें। वास्तविक सर्प दिखाई दे तो उसे पकड़ने या दूध पिलाने का प्रयास न करें; सुरक्षित दूरी रखकर प्रशिक्षित सहायता बुलाएँ।

पूजन का अवसर

मंगला गौरी व्रत श्रावण मास के मंगलवारों में किया जाता है। उत्तर और दक्षिण भारतीय तथा महाराष्ट्रीय परंपराओं में सामग्री, पूजा का क्रम और उद्यापन का समय बदल सकता है। अपने घर के प्रचलित रूप को श्रद्धा और स्वास्थ्य-सावधानी के साथ निभाएँ।

॥ जय मंगला गौरी माता ॥